सूरह – एक कहानी

सूरह अल-माऊन

छोटी भलाइयाँ

पूरा सफ़र – वो नमाज़ जो नाकाम हो जाए –
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 107 • 7 आयतें • मक्की

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

अ-र-अयतल्-लज़ी युकज़्ज़िबु बिद्-दीन

1. क्या आपने उसे देखा जो जज़ा-ओ-सज़ा को झुठलाता है?

फ़-ज़ालिकल्-लज़ी य-दु'उल्-यतीम

2. तो यही वो है जो यतीम को धक्के देता है।

व ला यहुद्दु 'अला त'आमिल्-मिस्कीन

3. और मिस्कीन को खाना खिलाने पर उभरता नहीं।

फ़-वैलुल्-लिल्-मुसल्लीन

4. तो ख़राबी है उन नमाज़ियों के लिए।

अल्लज़ीन हुम 'अन सलातिहिम साहून

5. जो अपनी नमाज़ से ग़फ़लत बरतते हैं।

व यम्न'ऊनल्-माऊन

7. और बरतने की मामूली चीज़ें भी रोक लेते हैं।

क्या आपने उसे देखा?

बेटा, यह सूरह एक ऐसे सवाल से शुरू होती है जो आपको आस्तीन से पकड़ लेता है: 'अ-र-अयतल्-लज़ी युकज़्ज़िबु बिद्-दीन — क्या आपने उसे देखा जो जज़ा-ओ-सज़ा को झुठलाता है?'

बेटा, यहाँ 'अद्-दीन' से मुराद क़ियामत का दिन है, हिसाब, बदला। और अल्लाह पूछ रहे हैं: क्या आपने उसे देखा — गोया भीड़ में किसी शख़्स की तरफ़ उँगली उठा कर। उस वाले को देखो। जानना चाहते हो कि क़ियामत का मुनकिर कैसा दिखता है?

और अब बेटा, तैयार हो जाइए — क्योंकि जवाब वो नहीं है जिसकी कोई तवक़्क़ो करे। अल्लाह यह नहीं कहते कि वो दोबारा ज़िंदा होने के ख़िलाफ़ दलाइल देता है, या किताब का मज़ाक़ उड़ाता है, या नबी ﷺ को बुरा कहता है।

वो उसकी पहचान दो आम रोज़मर्रा हरकतों से कराते हैं: 'फ़-ज़ालिकल्-लज़ी य-

दु'उल्-यतीम — यही वो है जो यतीम को धक्के देता है — व ला यहुद्दु 'अला त'आमिल्-मिस्कीन — और मिस्कीन को खाना खिलाने पर उभरता नहीं।'

बेटा, इस बात की संगीनी समझिए। इस सूरह के मुताबिक़, इस बात की असल दलील कि कोई शख़्स क़ियामत पर ईमान रखता है या नहीं, उसकी ज़ुबान में नहीं — इसमें है कि वो एक बे-बाप बच्चे के साथ कैसा सुलूक करता है, और उसे इस बात की परवाह है या नहीं कि लोग भूखे हैं।

'य-दु'उ' — 'दा" से, यानी सख़्ती से हटाना, धक्का देना, धुत्कारना। सिर्फ़ यह नहीं कि 'वो यतीम की मदद नहीं करता' — वो उसे धक्का देता है। तसव्वुर कीजिए, बेटा: एक बच्चा किसी ज़रूरत से दरवाज़े पर आता है, और एक हाथ उसे पीछे धकेल देता है। या आज का रूप: रिश्तेदार का यतीम बेटा जिसे बोझ समझा जाता है, सबसे छोटा कमरा दिया जाता है, झिड़क कर बात की जाती है, और एहसास दिलाया जाता है कि उसका होना ही ज़हमत है।

और दूसरी बात: 'ला यहुद्दु' — वो उभरता नहीं, दूसरों को मिस्कीन को खिलाने पर नहीं उकसाता। बेटा, जुर्म सिर्फ़ खिलाना छोड़ देना नहीं है — जुर्म यह है कि भूखे के लिए आवाज़ तक न उठाना। एक लफ़्ज़ हौसला-अफ़ज़ाई का नहीं। एक बार भी नहीं कि 'भाई, चलो उस आदमी की मदद करते हैं'।

बेटा, क़ियामत का इनकार आख़िर यहीं पर क्यों ज़ाहिर होता है? क्योंकि यतीम और मिस्कीन ठीक वही लोग हैं जो आपको कुछ लौटा नहीं सकते। वो आपको तरक़्क़ी नहीं दे सकते, दावत नहीं दे सकते, तारीफ़ नहीं कर सकते, एहसान नहीं चुका सकते। तो उनके साथ आपका सुलूक यह खोल देता है कि आप वाक़ई किसी न-दिखने वाले अज्र के लिए काम कर रहे हैं — या सिर्फ़ उन नतीजों के लिए जो आपको दिख जाते हैं।

ख़राबी है उन नमाज़ियों के लिए

और अब बेटा, वो आयत जिसने चौदह सदियों से इबादत गुज़ारों को हिला कर रख दिया है: 'फ़-वैलुल्-लिल्-मुसल्लीन — तो ख़राबी है उन नमाज़ियों के लिए।'

बेटा, इसे दोबारा पढ़िए। ख़राबी — हलाकत — उन लोगों के लिए जो नमाज़ पढ़ते हैं? जो मुसल्ले पर खड़े हैं?

यह क़ुरआन के सबसे चौंका देने वाले जुमलों में से है। जो भी इसे सुनता है, एक लम्हे के लिए उसकी साँस रुक जाती है। और फिर फ़ौरन क़ैद आ जाती है, और सब कुछ खुल जाता है:

'अल्लज़ीन हुम 'अन सलातिहिम साहून — जो अपनी नमाज़ से ग़फ़लत बरतते हैं।'

बेटा, हर्फ़ पर ग़ौर कीजिए, क्योंकि उलमा ने इसी पर पूरी बात खड़ी की है। अल्लाह यह नहीं कहते 'फ़ी सलातिहिम साहून' — अपनी नमाज़ में ग़ाफ़िल। वो कहते हैं "अन सलातिहिम' — अपनी नमाज़ से ग़ाफ़िल, उसके बारे में ग़ाफ़िल।

बेटा, यह फ़र्क़ अहम है। हर शख़्स का ज़ेहन कभी न कभी नमाज़ में भटकता है — काम का कोई ख़याल, कोई याद, कोई तवज्जोह का हटना। यह इंसानी बात है, और नबी ﷺ ने हमें इसका इलाज सिखाया है। यह आयत उस पर मलामत नहीं कर रही।

जिस पर मलामत है वो ख़ुद नमाज़ के बारे में ग़फ़लत है: इस बात की परवाह ही न होना कि वो होती है या नहीं, उसे टालते रहना यहाँ तक कि उसका वक़्त ख़त्म होने लगे, उसे ऐसी चीज़ समझना जो कोई भी दूसरा काम आ जाए तो छोड़ दी जाए, उसे जल्दी जल्दी एक रस्म की तरह पढ़ लेना बग़ैर यह सोचे कि किसके सामने खड़े हैं।

उलमा ने इनकी तशरीह यूँ की: वो जो नमाज़ को उसके वक़्त से ताख़ीर करते हैं, जो बग़ैर ख़ुशू के पढ़ते हैं, जो सिर्फ़ तब पढ़ते हैं जब लोग देख रहे हों। बेटा, दूसरे लफ़्ज़ों में: नमाज़ उनके शेड्यूल में है, मगर उनके दिल में नहीं।

'अल्लज़ीन हुम युरा-ऊन — जो उसका दिखावा करते हैं।'

और बेटा, यही पूरी सूरह का मेहवर है: रिया — दिखावा। यह वो शख़्स है जो देखे जाने पर ख़ूबसूरत नमाज़ पढ़ता है और तन्हाई में लापरवाही से। जिसका सदक़ा एलान के साथ होता है। जिसकी नेकियों को नाज़रीन चाहिए होते हैं।

नबी ﷺ ने रिया को 'अश-शिर्क अल-अस्ग़र' — छोटा शिर्क — कहा और फ़रमाया कि

मुझे अपनी उम्मत पर सबसे ज़्यादा इसी का ख़ौफ़ है। और आपने ख़बर दी कि उस दिन एक शख़्स जो लड़ा, एक जिसने दिया, और एक आलिम — तीनों से कहा जाएगा: तुमने यह इसलिए किया था कि तुम्हारे बारे में कहा जाए — और कहा जा चुका। अपना बदला ले लो; तुम वो पहले ही वसूल कर चुके।

बेटा, इस सूरह का सबसे ख़ौफ़नाक ख़याल यही है: एक शख़्स हर रस्म पूरी कर सकता है और उसे कुछ भी न मिले — क्योंकि उसकी अदायगी इसी दुनिया में ले ली गई, लोगों की वाहवाही की शक्ल में।

और वो मामूली चीज़ें भी रोक लेते हैं

और सूरह की आख़िरी आयत, बेटा, वही है जो सब कुछ बाँध देती है: 'व यम्न'ऊनल्-माऊन — और वो माऊन रोक लेते हैं।'

बेटा, 'माऊन' की तफ़्सीर सहाबा और उलमा ने बहुत ख़ूबसूरत अमली अंदाज़ में की है: वो छोटी चीज़ें जो लोग एक दूसरे को उधार देते हैं। एक बाल्टी। एक हांडी। एक रस्सी। नमक। एक औज़ार, एक दोपहर के लिए। इब्ने मसऊद (रज़ि0) ने फ़रमाया: यह कुल्हाड़ी, हांडी, डोल और इस क़िस्म की चीज़ें हैं।

बेटा, आज की ज़ुबान में: मोबाइल का चार्जर। सीढ़ी। फ़ालतू चाबी। स्टेशन तक लिफ़्ट। किसी का सामान सीढ़ियों पर चढ़ाने में पाँच मिनट। वो छोटा सा एहसान जो आपको तक़रीबन कुछ नहीं पड़ता।

और बेटा, अब वो भयानक तस्वीर देखिए जो सूरह ने मुकम्मल की है। यह शख़्स नमाज़ पढ़ता है — वो सफ़ में मौजूद है, उसका नाम फ़ेहरिस्त में है। वो अपना दीन ज़ाहिरी तौर पर अदा करता है। और फिर भी: वो यतीम को धक्का देता है, भूखे के बारे में कुछ नहीं कहता, और अपने पड़ोसी को एक बाल्टी तक नहीं देता।

बेटा, देख रहे हैं अल्लाह क्या सिखा रहे हैं? वो दीन जो कोई नर्मी पैदा न करे, नाकाम है — चाहे उसमें कितनी ही रकअतें हों। नमाज़ तो इंसान को नरम करने के लिए बनाई गई थी। अगर कोई चालीस साल नमाज़ पढ़े और फिर भी अपने पड़ोसी को एक

हांडी न दे सके, तो उसके और उसकी नमाज़ के दरमियान कुछ टूट चुका है।

और इसी लिए सूरह का आग़ाज़ 'जो जज़ा-ओ-सज़ा को झुठलाता है' से होता है और इख़्तिताम एक रोकी हुई बाल्टी पर। ये दोनों एक ही शख़्स हैं। क्योंकि जो शख़्स सच मुच मानता हो कि हर ज़र्रा लिखा जा रहा है, वो कभी एक छोटी भलाई से इनकार न करता — वो उसे कुछ नहीं पड़ती और उसकी क़ीमत सब कुछ है।

बेटा, इस सूरह से तीन अमली बातें ले लीजिए।

पहली — अपनी नमाज़ के वक़्त का जाइज़ा लीजिए, सिर्फ़ गिनती का नहीं। क्या वो वो मुक़र्रर वक़्त है जिसके गिर्द आप अपना दिन तरतीब देते हैं, या वो चीज़ है जो तब फ़िट की जाती है जब और कुछ न हो?

दूसरी — अपने नाज़रीन का जाइज़ा लीजिए। पूछिए: क्या मैं यह काम बिल्कुल इसी तरह करता अगर किसी को कभी पता न चलता? और उलमा की बताई हुई एक ख़ूबसूरत हिफ़ाज़त: कुछ अमल हमेशा के लिए पोशीदा रखिए, ताकि आपके रिकॉर्ड का एक हिस्सा ऐसा हो जिसे किसी की राय छू ही न सके।

तीसरी — छोटी भलाइयाँ लोगों के लिए आसान बना दीजिए। वो शख़्स बनिए जिससे माँगते हुए लोगों को झिझक न हो। चीज़ दे दीजिए। लिफ़्ट दे दीजिए। मैसेज का जवाब दे दीजिए। बेटा, इस सूरह की आख़िरी आयत आपको बता रही है कि अल्लाह इन चीज़ों को गिनते हैं — और इनकी ग़ैर-मौजूदगी को क़ियामत के इनकार के साथ एक ही फ़ेहरिस्त में रखा गया है।

इस सूरह से क्या सीखा

1. क़ियामत पर ईमान दलाइल से नहीं, रवैये से साबित होता है।

2. जो आपको कुछ लौटा नहीं सकते, उनके साथ आपका सुलूक खोल देता है कि आप किस अज्र के लिए काम कर रहे हैं।

3. यतीम को कभी मत धुत्कारिए — और भूखे के बारे में कभी ख़ामोश मत रहिए।

4. मलामत नमाज़ के बारे में ग़फ़लत पर है, उसके अंदर आने वाले ख़याल पर नहीं: उसके वक़्त की और दिल में उसके मक़ाम की हिफ़ाज़त कीजिए।

5. रिया छोटा शिर्क है और नबी ﷺ को हम पर सबसे ज़्यादा इसी का ख़ौफ़ था — जो लोगों के लिए करते हैं, उन्हें लोगों से ही मिल जाता है।

6. कुछ अमल हमेशा के लिए पोशीदा रखिए, ताकि रिकॉर्ड का एक हिस्सा सिर्फ़ अल्लाह का हो।

7. वो दीन जो छोटी भलाइयाँ पैदा न करे, नाकाम है — बाल्टी दे दीजिए।

या अल्लाह, हमारी नमाज़ों को दिखावे से पाक फ़रमाइए, यतीम और मिस्कीन के लिए हमारे हाथ नरम कर दीजिए, और हमें कभी छोटी भलाई रोकने वाला मत बनाइए। आमीन।